International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 6; June 2016; Page No. 186-187

प्रेमचन्द के उपन्यासों मे नारी स्वरूप

डॉ॰ आभा त्यागी

प्राचार्या वैष्य कन्या ममहाविद्यालय समालखा, पानीपत हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

उपन्यास एक ऐसी साहित्यिक विधा है जिसका अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा मानव जीवन से अधिक निकट का रिष्ता है मनुष्य जीवन के न केवल व्यक्तिगत जीवन का बल्कि सामाजिक जीवन का चित्रण भी उपन्यास में किया जाता है। अतः तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति का प्रभाव भी अनायास ही उपन्यासों पर पड़ता है। सामाजिक परिस्थितियों मे होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव भी तत्कालीन उपन्यासो में परिलक्षित होता है। प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक रॉल्फ फॉक्स ने कहा है कि ''उपन्यास मानव जीवन का गद्य है यह केवल भावात्मक गल्प नही है। उपन्यास मानव जीवन और उसके विचारो की अभिव्यक्ति का गद्यात्मक प्रयास है।'' उपन्यास को प्रथम साहित्यिक विधा माना है जिसमें मानव जीवन को यथार्थ रूप में समझने का ही नही वरन चित्रित करने का भी सफल प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में जो बीस वर्षो का काल प्रेमचन्द युग के नाम से जाना जाता है। वह राष्ट्रीय जागृति एवं सामाजिक उदबोधन है।

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द का आगमन एक क्रान्तिकारी परिवर्तन के रूप मे माना जाता है। महान कलाकार प्रेमचन्द अपने युग के प्रति पूर्ण जीवन्त थे। उनके साहित्य में तत्कालीन भारत की एक भी समस्या अछूती नहीं रही है। प्रेमचन्द के आगमन से उपन्यास क्षेत्र में काफी परिवर्तन हो गया। वे उपन्यास को काल्पनिक जगत से वास्तविक जगत की ठोस भूमि पर ले आए। बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा एवं अषिक्षा जैसी अनेक उपेक्षित समस्याओं का उन्होंने अपने उपन्यासो में संकेत किया और स्त्री षिक्षा प्रसार तथा स्त्री जागृति का कार्य किया। प्रेमचन्द ने कहा है ''यदि भारतीय समाज का उत्थान करना है तो नारी उत्थान के बिना वह सम्भव नहीं है, नारी मॉ है, मॉ के षिक्षा के बिना सन्तान कभी सुयोग्य नही बन सकती और बिना सुयोग्य सन्तान के इस देष का उद्धार सम्भव नही है।''

नारी आन्दोलन के कारण नारी की स्थिति में जो परिवर्तन हो रहा था, उससे प्रभावित होकर उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में चित्रित नारी स्वरूप में भी परिवर्तन कर दिया। षिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक आत्मविष्वास से परिपूर्ण सजग एवं व्यक्तित्व सम्पन्न नारी के स्वरूप हमे प्रेमचन्द युग के उपन्यासों में देखने को मिलते है।

प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। पारिवारिक जीवन में नारी के स्वरूप में नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ अपने स्वतन्त्र विचारो एवं व्यक्तित्व के लिए पति तथा परिवार से विद्रोह करने वाली नारी के रूप में दिखायी देती है 'रंगभूमि' उपन्यास की नायिका इन्दु और उसके पति राजा महेन्द्र कुमार में वैचारिक तथा तात्विक संघर्ष व इन्दु के विचार राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत है दोनो के वैवाहिक सम्बन्ध टूटने की अवस्था पर होते है इन्दु की मॉ समझाती है ''वह तेरे पतिदेव है, तेरे लिए उनकी सेवा से उत्तम और कोई नही है'' जो अपने पति का अपमान करती है उसे परलोक नही मिल सकता। क्योंकि सामन्ती युग के आदर्ष एवं संस्कृति से प्रेरित ये विचार आधुनिक नारी को स्वीकार नही, वह अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहती है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'अपराजिता' उपन्यास की राज भी आत्म सम्मान व आत्म गौरव की रक्षा करने वाली नारी है। प्रताप नारायण श्रीवास्तव के 'विदा' उपन्यास की कुमुदिनी भी नारी में आत्म सम्मान, आत्म गौरव की भावना होना आवष्यक मानती है। प्रेमचन्द के 'कर्म भूमि' उपन्यास की नायिका सुखदा न केवल अन्याय का विरोध करती है अपितु अपने जीवन से कर्मयोग का संदेष भी देती है मन्दिर में अछूतो के प्रवेष के लिए दिए गये सत्याग्रह के समय पुलिस द्वारा जनता पर अत्याचार होने लगता है तब वह स्वंय पुलिस वालों के सामने खड़ी होकर जनता को धीरज देते हुए कहती है ''भाइयों क्यों भाग रहे हों? यह भागने का समय नही, छाती खोलकर सामने खड़े होने का समय है दिखा दो कि तुम धर्म के नाम पर किस तरह प्राणों को होम करते हो। धर्मवीर ही ईष्वर को पाते है भागने वालों की कभी विजय नहीं होती। ''

आज की नारी पुरूष की सम्पत्ति बन कर जीवन–यापन करना अपना अपमान समझती है'' इन्दू, नील मार्ग, राज, सुखदा आदि सभी नारियों ने स्वतन्त्र रूप से अपने व्यक्तित्व की स्थापना करने का प्रयत्न किया है। अपने व्यक्तित्व मे नए, स्वतन्त्र सॉचे में ढ़ालने के लिए वह प्रस्तुत है।

सियाराम शरण गुप्त की उपन्यास 'भिखारिणी' में यषोदा के पिता दो बार विवाहित आदमी रामनाथ से विवाह करना चाहते है किन्तु वह अस्वीकार करती हुई कहती है ''वह मान भी ले लेकिन मै तो नही मानूॅगी।'' यषोदा सर्वस्व त्यागकर भिखारिणी बन जाती है लेकिन रामनाथ से विवाह करना स्वीकार नही करती।

प्रेमचन्द का 'निर्मला' उपन्यास अनमेल विवाह की करूण कहानी है। निर्मला की परिस्थितियो का मनोवैज्ञानिक विष्लेषण प्रेमचन्द ने किया है ''वह अपना रूप और यौवन उन्हे न दिखाना चाहती थी क्योकि वहॉ देखने वाली ऑखे न थी वह इन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य न समझती थी कली प्रभात समीर ही के स्पर्ष से खिलती है, दोनों मे समान सारस्य है, निर्मला के लिए वह प्रभात समीर कहॉ था''? जीवन का अंतिम समय भी क्यों न हो अनमेल विवाह का सषक्त विरोध करने वाली निर्मला इस युग की प्रभावकारी नारी पात्र है। 'कुण्डली चक्र' उपन्यास में बहु विवाह की प्रथा का विरोध करने वाली 'पूना' जैसी तेजस्वी का वर्णन मिलता है।

प्रेमचन्द काल में नारी के स्वातन्त्रय की कल्पना तत्कालीन उपन्यासकारों ने मार्यादित रूप में, आदर्षवाद की भाव भूमि पर की थी वे परम्परागत भारतीय नारी के स्वरूप मे आस्था रखते है। प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास में मालती के स्वछन्द प्रेम की परिणति सेवाभाव में दिखलाकर आदर्ष की प्रतिष्ठापना करते है मालती स्त्री पुरूष के वैवाहिक सम्बन्धों के स्थान पर मैत्री को ही उचित मानती है। वह कहती है ''मित्र बनकर रहना स्त्री पुरूष बनकर रहने से कहीं सुखकर है तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विष्वास करते हो, मैं भी तुमसे प्रेम करती हूॅ, तुम पर विष्वास करती हूॅ, हमारी पूर्णता के लिए हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए।'' प्रेमचन्द आदर्षवादी उपन्यासकार थे वे नारी के स्वछन्द प्रेम को

उचित नही मानते। प्रेमचन्द काल में नारी के स्वछन्द प्रेम को भी अन्त में आदर्ष का रूप दिया गया था।

प्रेमचन्द के उपन्यास 'गबन' मे जालपा ऐसी पत्नी है जो अपने कारण बहके हुए गलत रास्ते पर भटके हुए पति को अपने विष्वास, प्रेम तथा श्रद्धा एवं प्रयत्नों के बल पर योग्य मार्ग पर लाने का कर्तव्य निभाती है। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में प्रेमचन्द ने विधवा के जीवन की विभिन्न समस्याओं का पुर्नविवाह कराकर चित्रण किया है।

प्रेमचन्द तथा समकालीन उपन्यासों ने वेष्याओं की ओर देखने का सहानुभूतिपूर्ण तथा उदार दृष्टिकोण अपनाया और कहा ''हमें उनसे घृणा करने का कोई अधिकार नहीं यह उनके साथ घोर अन्याय होगा, यह हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे सामाजिक अनाचार हमारी ही कुप्रथाएँ है जिन्होने वेष्याओं का रूप धारण किया है।'' ''गोदान'' की धनिया पात्र विषम परिस्थितियो के होते हुए भी आत्म सम्मान से परिपूर्ण है। इस प्रकार प्रेमचन्द युग में नारी षिक्षा का काफी प्रचार हुआ। निष्कर्षतः यह युग नारी सुधार आन्दोलन से अनुप्राणित युग था। नारी के सुधारवादी दृष्टिकोण को अपनाया। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों द्वारा बन्धनों एवं घरों में जकड़ी नारी का उद्धार किया। प्रेमचन्द जी ने अपने चार उपन्यासों सेवासदन, निर्मला, काया कल्प, गबन मे दहेज समस्या को विस्तारपूर्वक उठाकर यह सिद्ध कर दिया कि दहेज–प्रथा समाज के लिए कितनी घातक है । यह स्पष्ट है कि प्रेमचन्द जी एक उदार समाज स्थापित करना चाहते थे जब तक समाज मे अनीति, अन्याय, अत्याचार, अविचार और शोषण विद्यमान है तब तक प्रेमचन्द की कृतियॉ मषाल का काम करती रहेगीं।

संदर्भ सूची

1. राल्फ–फॉक्स: डॉ॰ सरोजिनी त्रिपाठी उ॰ मि॰ से उद्धृत The Novel and the people P 62.
2. प्रेमचन्द, कुछ विचार 1965 पृष्ठ 12
3. प्रेमचन्द, रंगभूमि पृष्ठ 355
4. वही पृष्ठ 400
5. प्रेमचन्द, कर्मभूमि 1964 पृष्ठ 210
6. कुॅवर पाल सिंह, हिन्दी उपन्यास, सामाजिक चेतना 1967 पृष्ठ 71
7. प्रेमचन्द, निर्मला पृष्ठ 58
8. सियाराम शरण गुप्त, भिखारिणी, तृतीय संस्करण 1952 पृष्ठ 314
9. प्रेमचन्द, गोदान–तेरहवां संस्करण, पृष्ठ 255
10. प्रेमचन्द, सेवासदन– पृष्ठ 255, पृष्ठ 24